MARKING SCHEME
ECONOMICS (576)

Class 12th **SAMPLE PAPER** **SET: C** **M.M:80**

Q.NO.	EXPECTED ANSWER/VALUE POINTS		MARKS
1	d) गरीबी और बेरोजगारी की समस्या	(d) Problem of poverty and unemployment	1
2	c) कीमत में परिर्वतन के बिना मांग में परिर्वतन	(c) change in demand without change in price	1
3	b) AR घट रहा हो	(b)when AR decreasing	1
4	a)शुन्य	(a)zero	1
5	(b) पुर्ण बेलोचदार पूर्ति	(b)perfectly Inelastic supply	1
6	व्यष्टि अर्थशास्त्र	Micro Economics	1
7	(-) P/Q × ΔQ/ΔP	(-) P/Q × ΔQ/ΔP	1
8	तकनीकि	Technical	1
9	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
10	अभिकथन(A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।	Assertion (A) is true but Reason (R) is false.	1
11	सीमांत लागत सीमांत आय के बराबर होनी चाहिए सीमांत लागत वक्र सीमांत आय को नीचे से काटती है। अथवा पुर्ति की लोच (E_s) = P/Q × ΔQ/PΔ P=4, P_1 =5; PΔ = 5–4 = 1 Q = 8, Q_1 = 10; ΔQ = 10 – 8 = 2 Es = 4/8 × 2/1 = 1 (इकाई)	MC=MR MC curves cuts MR curve from below or Elasticity of supply (E_s) = P/Q × ΔQ/PΔ P=4, P_1 =5; PΔ = 5–4 = 1 Q = 8, Q_1 = 10; ΔQ = 10 – 8 = 2 Es = 4/8 × 2/1 = 1 (Unitary)	1.5 1.5 3
12	उपभोक्ता बजट से अभिप्राय उपभोक्ता की निर्धारित आय से है। जिसे इसे बजट रेखा द्वारा भी परिभाषित किया जा सकता हैं जो दो वस्तुओं के सेट के विभिन्न संयोगों को प्रकट करती है जो एक उपभोक्ता अपनी दी हुई आय तथा वस्तुओं की दी हुई कीमत पर खरीद सकता है। इसे कीमत रेखा भी कहते है क्योकि यह वस्तु-x तथा वस्तु-y के बीच कीमत अनुपात को प्रकट करती है।	Consumer budget means the fixed income of the consumer. In which can also be defined by the budget line which reveal different combinations of sets of two objects a consumer who is dependent on his given income and given amount of goods an buy at price. It is also called price line, because this reveals the price ratio between commodity x and commodity y.	3
13	अन्य बाते समान रहने पर किसी वस्तु की अपनी कीमत बढने पर उसकी मांग कम हो जाती है तथा अपनी कीमत कम होने पर उसकी मांग बढ जाती है। अथवा अन्य बाते समान रहने पर किसी वस्तु की अपनी कीमत बढने पर उसकी पुर्ति बढ जाती है तथा कीमत कम होने पर पुर्ति भी कम हो जाती है।	The demand for a good when its price increases, other things remaining the same. It decreases and its demand increases when its price decreases. Or Other things remaining the same, when the price of a commodity increases, its supply increases and when the price decreases, the supply also decreases.	
14	अवसर लागत की धारणा लागत की आधुनिक धारणा है। किसी साधन की अवसर लागत से अभिप्राय दूसरे सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक प्रयोग में उसके मुल्य से है। अतएव किसी साधन की अवसर लागत वह लागत है जिसका उस साधन को किसी एक कार्य में कार्यरत होने के फलस्वरुप दुसरे वैकल्पिक कार्य को नही कर पाने के कारण त्याग करना पडता है।	The concept of opportunity cost is the modern concept of cost. opportunity of any means Cost means its value in the second best alternative use. Therefore The opportunity cost resource is the cost of Being unable to do other alternative work as a result of being employed at work Reason has to be sacrificed.	4
15	पुर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है जिसमें किसी समरुप वस्तु के बहुत से क्रेरता तथा विक्रेता होते है। पुर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्म केवल बाजार कीमत पर ही अपने उत्पादन का	Perfect competition is a market situation in which there are many sellers of an identical product. There are buyers and sellers. In perfect competition the	2$2

Download from www.MsEducationTv.com

	विक्रय कर सकती है। पुर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्म की प्रत्येक इकाई की विक्रय कीमत समान होती है। परिणामस्वरुप उसका सीमांत तथा औसत आगम बराबर होता है।	firm can only charge the market price. She can sell her produce only. under perfect competition The selling price of each unit of the firm is the same. as a result of Marginal and average revenue are equal.	

16

कुल उत्पादनः एक निश्चित समया में उत्पादित की गई वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मात्रा को कुल उत्पादन कहा जाता है।
सीमांत उत्पादनः परिवर्तनशील कारक की एक इकाई का कम या अधिक प्रयोग करने से कुल उत्पाद में जो अंतर आता है सीमांत उत्पाद कहा जाता है।

(Marginal Product)

भूमि की इकाइयाँ (हेक्टेयर)	श्रम की इकाइयाँ	कुल उत्पाद	सीमांत उत्पाद
0	0	0	—
1	1	2	2 − 0 = 2
1	2	5	5 − 2 = 3
1	3	9	9 − 5 = 4
1	4	11	11 − 9 = 2
1	5	12	12 − 11 = 1
1	6	12	12 − 12 = 0
1	7	11	11 − 12 = −1

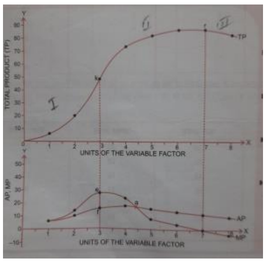

अथवा

पुर्ति की कीमत लोच किसी वस्तु की कीमत मंे होने वाले परिवर्तन के फलस्वरुप उसकी पूर्ति में होने वाले परिवर्तन का माप है।
1) पुर्ति की लोच >1: जब किसी वस्तु की पुर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से अधिक होता है इस दशा में पुर्ति की लोच इकाई से अधिक होती है।
2) पुर्ति की लोच < 1: जब किसी वस्तु की पुर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से कम होता है तो इस दशा में पुर्ति की लोच इकाई से कम होती है।
3) पुर्ति की लोच = 1: किसी जब किसी वस्तु की पुर्ति में परिवर्तन उसी अनुपात में होता है जिस अनुपात में उसकी कीमत में परिवर्तन हुआ हैं तो उस वस्तु की पूर्ति को इकाई लोच कहते हैं।

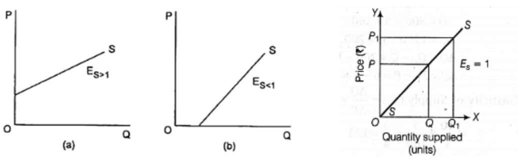

Fig. 5 : Elastic and inelastic supply

Total production: The total number of goods and services produced in a given period of time.
The total quantity is called total production.
Marginal production: Using more or less of a unit of a variable factor.
The difference in total product resulting from doing so is called marginal product.

(Marginal Product)

भूमि की इकाइयाँ (हेक्टेयर)	श्रम की इकाइयाँ	कुल उत्पाद	सीमांत उत्पाद
0	0	0	—
1	1	2	2 − 0 = 2
1	2	5	5 − 2 = 3
1	3	9	9 − 5 = 4
1	4	11	11 − 9 = 2
1	5	12	12 − 11 = 1
1	6	12	12 − 12 = 0
1	7	11	11 − 12 = −1

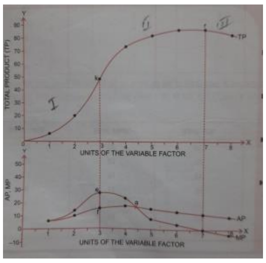

Or

Price elasticity of supply is the effect of a change in the price of a good. It is the measure of the change in its supply.
1) Elasticity of supply > 1 : When the percentage change in the supply of a good depends on the price.
If it is more than the percentage change, then in this case the elasticity of supply is greater than unit Is more.
2) Elasticity of supply <1 : When the percentage change in the supply of a good increases in price is less than the percentage change occurring, then in this case the elasticity of supply is unit Is less than.
3) Elasticity of supply =1: When the change in supply of a good occurs in the same proportion as the change in its price, then the supply of that good increases.
is called unit elasticity.

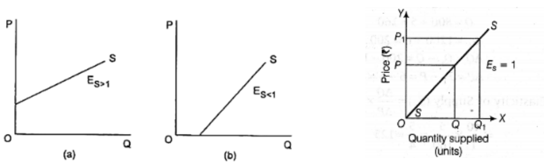

Fig. 5 : Elastic and inelastic supply

2+2+2

Download from www.MsEducationTv.com

<table>
<tr><td>17</td><td>
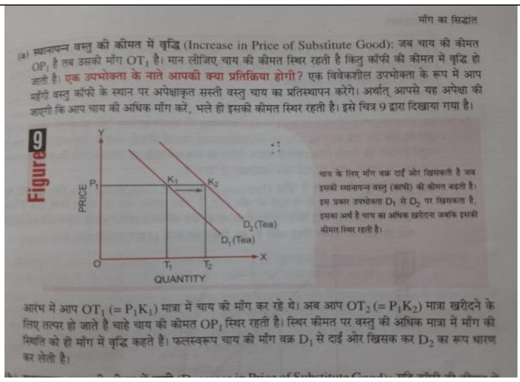
माँग का सिद्धांत

(a) स्थानापन्न वस्तु की कीमत में वृद्धि (Increase in Price of Substitute Good): जब चाय की कीमत OP_1 है तब उसकी माँग OT_1 है। मान लीजिए चाय की कीमत स्थिर रहती है किंतु कॉफी की कीमत में वृद्धि हो जाती है। एक उपभोक्ता के नाते आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? एक विवेकशील उपभोक्ता के रूप में आप महँगी वस्तु कॉफी के स्थान पर अपेक्षाकृत सस्ती वस्तु चाय का प्रतिस्थापन करेंगे। अर्थात् आपसे यह अपेक्षा की जाएगी कि आप चाय की अधिक माँग करें, भले ही इसकी कीमत स्थिर रहती है। इसे चित्र 9 द्वारा दिखाया गया है।

आरंभ में आप $OT_1 (= P_1K_1)$ मात्रा में चाय की माँग कर रहे थे। अब आप $OT_2 (= P_1K_2)$ मात्रा खरीदने के लिए तत्पर हो जाते हैं चाहे चाय की कीमत OP_1 स्थिर रहती है। स्थिर कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा में माँग की स्थिति को ही माँग में वृद्धि कहते हैं। फलस्वरूप चाय की माँग वक्र D_1 से दाईं ओर खिसक कर D_2 का रूप धारण कर लेती है।

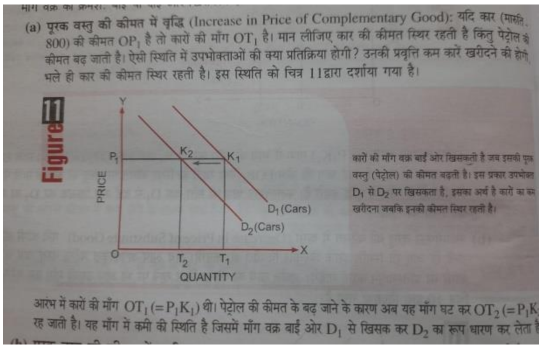
(a) पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि (Increase in Price of Complementary Good): यदि कार (मारुति 800) की कीमत OP_1 है तो कारों की माँग OT_1 है। मान लीजिए कार की कीमत स्थिर रहती है किंतु पेट्रोल की कीमत बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं की क्या प्रतिक्रिया होगी? उनकी प्रवृत्ति कम कारें खरीदने की होगी भले ही कार की कीमत स्थिर रहती है। इस स्थिति को चित्र 11 द्वारा दर्शाया गया है।

आरंभ में कारों की माँग $OT_1 (= P_1K_1)$ थी। पेट्रोल की कीमत के बढ़ जाने के कारण अब यह माँग घट कर $OT_2 (= P_1K_2)$ रह जाती है। यह माँग में कमी की स्थिति है जिसमें माँग वक्र बाईं ओर D_1 से खिसक कर D_2 का रूप धारण कर लेता है।
</td><td>
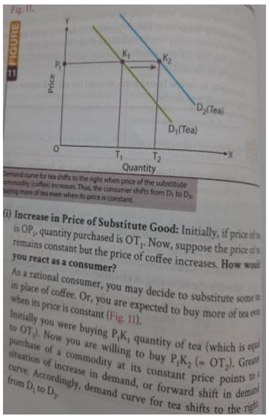

(i) **Increase in Price of Substitute Good:** Initially, if price of ... is OP_1, quantity purchased is OT_1. Now, suppose the price of ... remains constant but the price of coffee increases. **How would you react as a consumer?**

As a rational consumer, you may decide to substitute some ... in place of coffee. Or, you are expected to buy more of tea even when its price is constant (Fig. 11).

Initially you were buying P_1K_1 quantity of tea (which is equal to OT_1). Now you are willing to buy P_1K_2 (= OT_2). Greater purchase of a commodity at its constant price points to a situation of increase in demand, or forward shift in demand curve. Accordingly, demand curve for tea shifts to the right from D_1 to D_2.

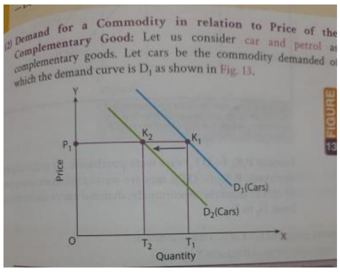
(2) **Demand for a Commodity in relation to Price of the Complementary Good:** Let us consider car and petrol as complementary goods. Let cars be the commodity demanded of which the demand curve is D_1 as shown in Fig. 13.

) **Increase in Price of Complementary Good:** Initially, if price of cars (say Swift) is OP_1, number of cars purchased is $P_1K_1 (= OT_1)$. Now, suppose this price remains constant but the price of petrol increases. **How would the consumers react to such a situation?**

They would tend to buy less cars, even when price of the cars is constant (Fig. 13).

Now, even when price of cars is constant, only P_1K_2 (= OT_2 instead of OT_1) cars are purchased, because price of petrol has increased. This is a situation of decrease in demand or backward shift in demand curve. Accordingly, demand curve shifts from D_1 to D_2.
</td><td></td></tr>
<tr><td>18</td><td>a) उपभोग</td><td>a) consumption</td><td>1</td></tr>
<tr><td>19</td><td>b) आयात</td><td>b) Export</td><td>1</td></tr>
<tr><td>20</td><td>b) 2</td><td>b) 2</td><td>1</td></tr>
<tr><td>21</td><td>a) स्थिर कीमतें</td><td>a) Fixed price</td><td>1</td></tr>
<tr><td>22</td><td>c) 1935</td><td>c)1935</td><td>1</td></tr>
<tr><td>23</td><td>मुद्रा के प्रवाह</td><td>flow of money</td><td>1</td></tr>
<tr><td>24</td><td>निवल अप्रत्यक्ष कर</td><td>net indirect tax</td><td>1</td></tr>
<tr><td>25</td><td>आय</td><td>income</td><td>1</td></tr>
<tr><td>26</td><td>a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।</td><td>a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)</td><td>1</td></tr>
<tr><td>27</td><td>a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।</td><td>a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)</td><td>1</td></tr>
<tr><td>28</td><td>आय मे से उपभोग घटाने के बाद जो शेष बचता है उसे बचत कहते है तथा जो बचत और आय के ंसंबंध को प्रकट करता है उसे बचत का फलन है।
बचत आय पर निर्भर करती है क्योंकि आय के बढने पर बचत बढती है और कम होने पर कम होती है। बचत में वृद्धि की दर समान्यतः आय में वृद्धि की दर से अधिक होती है।

अथवा

असंतुलन उस स्थिति को कहते है जिसमें भुगतान शेष या तो बचत वाला या घाटे वाला होता है। इसे ठीक करने के उपाय इस प्रकार है:- आयातें को हतोत्साहित करना।
निर्यातो को प्रोत्साहित करना। मुद्रा विस्फीति।अवमूल्यन।</td><td>The balance that remains after deducting consumption from income is called saving. Saving function which reveals the relationship between savings and income. Saving depends on income, because when income increases, savings increase and when it decreases, it decreases. The rate of growth in savings is generally higher than the rate of growth in income.

OR
An imbalance is a situation in which the payment of balance is either a saving or a deficit is the one. The ways to fix it are as follows: Discourage imports, Encourage exports, Currency deflation, Depreciation.</td><td>3

3</td></tr>
<tr><td>29</td><td>राष्ट्रीय आय एवं निजी आय में तीन अंतर इस प्रकार है:-
राष्ट्रीय आय: इसमें ब्याज शामिल किया जाता है जबकि निजी आय में राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज के भुगतान को शामिल</td><td>The three differences between national income and personal income are as follows:-
National Income: Interest is included in it whereas</td><td>1.5+
1.5</td></tr>
</table>

Download from www.MsEducationTv.com

	करतें है। राष्ट्रीय आय में केवल आय भुगतान शामिल किए जाते है जबकि निजी आय में आय भुगतान तथा हस्तांतरण भुगतान दोनों शामिल किए जाते हे।	Personal income includes interest payments on national debts. Let's do it. Only income payments are included in national income. While personal income includes income payments and transfers. Both payments are included.	
30	अधि मांग वह स्थिति है जिसमें समग्र मांग अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक समग्र पूर्ति से अधिक होती है। पूर्ण रोजगार के अनुरुप AD>AS 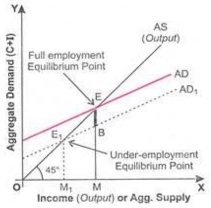 Fig 8.15 अथवा बजट घाटा:- बजट घाटे से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें सरकार का बजट व्यय, सरकार की बजट प्राप्तियों से अधिक होता है। बजटिय घाटा वह स्थिति है जिसमें सरकारी व्यय > सरकारी प्राप्तियां । यह तीन प्रकार का होता है:- 1. राजस्व घाटा 2. राजकोषीय घाटा 3. प्राथमिक घाटा प्राथमिक घाटे को पुरा करने के उपाय इस प्रकार है :- 1. सरकारी व्यय को कम करके 2. सरकारी प्राप्यिों में वृद्धि करके	Excess demand is a situation in which the aggregate demand in the economy is more than the aggregate supply required for employment. According to full employment AD>AS 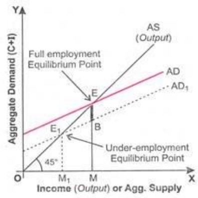 Fig 8.15 OR Budget deficit:- Budget deficit means the situation in which In which the budget expenditure of the government is more th the budget receipts of the government. Budgetary deficit is a situation in which government expenditure > government receipts. It is of three types:- 1. Revenue deficit 2. Fiscal deficit 3. Primary deficit Ways to overcome primary deficit are as follows Is :- 1. By reducing government expenditure 2. By increasing government receipts	2+2 2+2
31	कर सरकार द्वारा वैधानिक रूप् से ग्रहस्थों तथा उत्पादकों पर लगाया गया एक आवश्यक भुगतान है जो मुख्यतः प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों में वर्गीकृत किया गया है। इसकी मुख्य विशेषताएं इस प्रकार है:- 1. कर एक अनिवार्य भुगतान है जिसका भुगतान करदाता को अवश्य करना पडता है। 2. सरकार द्वारा कर से प्राप्त आय का प्रयोग सार्वजनिक हित के कार्यो में किया जाता है। 3ण् सरकार करदाता को कर के बदले में प्रत्यक्ष लाभ प्रदान करने का कोई आश्वासन नही देती है।	Taxes are legally imposed by the government on farmers and producers. Imposed is a necessary payment which is mainly direct and Classified as indirect taxes. Its main features are as follows 1. Tax is a mandatory payment which has to be paid by the taxpayer. Of course it has to be done. 2. Use of tax income by the government for public welfare Is done in the works of. 3. The government provides direct benefits to the taxpayer in lieu of taxes. Does not give any assurance of doing so.	2+2
32	उपभोग फलन वह अनुसूचि है जो आय के विभिन्न स्तरो पर उपभोग की मात्रा को बताती है। उपभोग से अभिप्राय किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समय में उपभोग पर किए जाने वाले समग्र व्यय से है जो अपनी आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से सन्तुष्ट करने के लिए लोगो द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं के को खरीदने पर खर्च की जाने वाली मुद्रा की मात्रा को उपभोग व्यय कहा जाता है। C=f (Y) 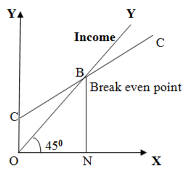 	Consumption function is a schedule that shows different types of income. Tells the quantity of consumption at levels. consumption means a certain period of time in an economy It is the total expenditure on consumption which directly satisfies one's needs. goods and services by people to the amount of money spent on purchasing is called consumption expenditure. C=f(Y) 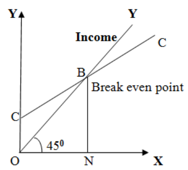 	2+2

Download from www.MsEducationTv.com

33	समग्र मांग रू. समग्र मांग से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में वस्तुओ तथा सेवाओं की समग्र मांग से है। इसे वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए जाने वाले समग्र व्यय के रूप् में मापा जाता है। इसके मुख्य रूप से दो घटक होते है:- 1.उपभोग व्यय 2. निवेश व्यय अतः समग्र मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय 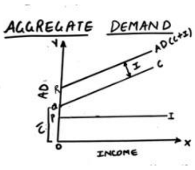 समग्र पुर्ति से अभिप्राय किसी निश्चित समय में किसी अर्थव्यवस्था द्वारा एक वर्ष की अवधि में उत्पादित समग्र अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मुल्य से है जिसे राष्ट्रीय आय या राष्ट्रीय उत्पाद भी कहा जाता हे। यह उत्पादन की समग्र लागत है जो उत्पादन के विभिन्न साधनों को मजदुदी लगान ब्याज तथा लाभ के रूप में दी जाती है। राष्ट्रीय आय लेखांकन के ज्ञान के आधार पर यहा कहा जा सकता है कि समग्र पूर्ति की धारणा मूल्य वृद्धि की धारणा के समान है। समग्र पूर्ति =उपभोग +बचत 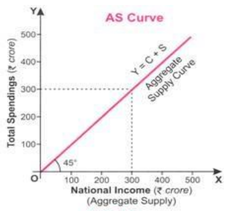 *Fig. 8.2* अथवा ऐच्छिक बेरोजागाी एवं अनैच्छिक बेरोजगारी ऐच्छिक बेरोजगारी ऐच्छिक बेरोजगारी से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें एक श्रमिक रोजगार उपलब्ध होने पर भी, मजदुरी की वर्तमान दर काम करने के लिए तैयार नही होता है। उदाहरण के लिए, एक डाॅक्टर का बाजार में प्रचलित वेतन 10 हजार रूपये प्रतिमाह है परंतु वह इस वेतन पर काम करने लिए तैयार नही है, इसे ऐच्छिक बेरोजगारी कहा जाएगा। इस बेरोजगारी को समग्र अनुमान में शामिल नही किया जाता । किसी देश मंे ऐच्छिक बेरोजगारी के होते हुए भी पूर्ण रोजगार हो सकता है। अनैच्छिक बेरोजगारी अनैच्छिक बेरोजगारी यह बेरोजगारी की वह स्थिति है जिसमें रोजगार के अवसर के अभाव मे बेरोजगार रहना पडता है, यद्यपि वे मजदुरी की वर्तमान दर पर काम करने तैयार होते है। अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के समग्र अनुमान में अनैच्छिक बेरोजगारी को शामिल किया जाता ।	The overall demand is Rs. Aggregate demand refers to the demand for goods in the economy. And from the overall demand for services. goods and services It is measured as the overall expenditure. It mainly has two components: 1. Consumption expenditure 2. Investment expenditure Hence, Aggregate Demand, Consumption Expenditure, Investment Expenditure AD= C+I 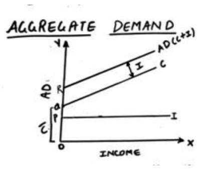 Overall supply means any aggregate produced by the economy over a period of one year The monetary value of final goods and services which Also called national income or national product. This production is the overall cost of various means of production Labor rent is given in the form of interest and profit. Based on the knowledge of national income accounting it can said here. The assumption of aggregate supply may be the assumption of price rise. Is similar to aggregate supply = consumption + savings 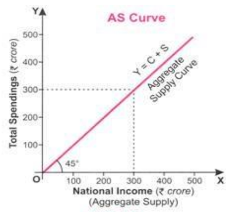 *Fig. 8.2* Voluntary unemployment and involuntary unemployment Voluntary Unemployment Voluntary unemployment refers to a situation in which a worker, even when employment is available, is still employed at the current rate of wages. Is not ready to work. For example, the prevailing market salary of a doctor 10 thousand rupees per month but he does not want to work at this salary. If the person is not ready for employment, it will be called voluntary unemployment. This Unemployment is not included in the overall estimate. Any There should be full employment despite voluntary unemployment in the country. Could. Involuntary Unemployment: Involuntary Unemployment: This is a situation of unemployment in which Due to lack of employment opportunities one has to remain unemployed. Although they are willing to work at the current rate of wages Happens. Involuntary in the overall estimate of unemployment in the economy Unemployment would have been included.	3+3 3+3
34	पूर्ण रोजगार एवं अल्प रोजगार संतुलन	full employment and underemployment balance Full Employment:- Full employment expresses the situation	3+3

Download from www.MsEducationTv.com

	पूर्ण रोजगार:- पूर्ण रोजगार उस स्थिति को व्यक्त करता है जिसमें समग्र मांग, समग्र पूर्ति के बराबर हो और वे सभी जो काम करने के योग्य तथा काम करने के इक्षुक है, वर्तमान मजदुरी की दर परद्ध काम प्राप्त कर लेते है। पूर्ण रोजगार संतुलन एक स्थिर संतुलन है जहा वास्तविक उत्पादन अधिकतम बिंदु पर पहुंच जाता है। पूर्ण रोजगार संतुलन से आगे बढने की अवस्था में कीमत स्तर में वृद्धि होती है। अल्प रोजगार संतुलन:- अल्प रोजगार संतुलन वह स्थिति हे जिसमें समग्र मांग समग्र पूर्ति के बराबर तो होती है लेकिन वे सी सभी जो काम करने के योग्य एवं इच्छुक है वर्तमान मजदुरी दर पर काम प्राप्त नही कर पाते है अल्प रोजगार संतुलन एक स्थिर संतुलन नही है और यहां वास्तविक उत्पादन उच्चतम बिंदु पर नही पहुंच पाता। अल्प रोजगार संतुलन से आगे बढने पर कीमत स्तर में भी वृद्धि नही होती है। अथवा मुद्रा की पूर्ति एक स्टा ॅक धारणा है। इससे अभिप्राय किसी एक समय बिंदु पर देश में लोगों के पास कुल मुद्रा ;सभी प्रकार कीद्ध के स्टा ॅक से है। भारत में मुद्रा पूर्ति के चार वैकल्पिक माप है, जैसे M_1, M_2, M_3 और M_4 M_1 = जनता के पास करेंसी + मांग जमाएं + रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएं । M_2 = M_1 + डाकखानों के बचत बैंक खातों में जमाएं। M_3 = M_1 + व्यापारिक बैंको की निवल सावधि जमाएं। M_4 = M_3 + डाकखानों की कुल जमाएं को (NSS को छोडकर) ।	that in which aggregate demand is equal to aggregate suppl and all those Able to work and willing to work, present Get work at wage rate. Full employment equilibrium is a stable equilibrium where real Production reaches its maximum point. Price moving from full employment equilibrium Level increases. Underemployment Equilibrium:- Underemployment Equilibrium is the situation In which aggregate demand is equal to aggregate supply but they all who are capable of working and Are interested but are unable to get work at the current wage rate Underemployment equilibrium is not a stable equilibrium and here Actual production does not reach its highest point. As the price level moves beyond underemployment equilibrium, There is no growth. full employment and underemployment balance Full Employment:- Full employment expresses the situation that in which aggregate demand is equal to aggregate supply all those Able to work and willing to work, present Get work at wage rate. Full employment equilibrium is a stable equilibrium where real Production reaches its maximum point. Price moving from full employment equilibrium Level increases. Or Money supply is a stock assumption. This means someone The total currency held by people in a country at a point in time (All types) are from stock. There are four alternative measures of money supply in India, such as M_1, M_2, and M_3 and M_4 M_1 = currency with the public + Demand deposit + Other deposits with the Reserve Bank of India. M_2 = M_1+ Deposit in the savings bank accounts of post offices. M_3 = M_1 + Net fixed deposits of commercial banks. M_4 = M_3 + Total deposits of post offices (Except NSS).	3+3

Download from www.MsEducationTv.com